INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

"संत एवं कवि पवन दीवान के काव्य 'राख', 'झेंझरी के ठेठरी', 'खेत-खार बखरी मं गहिरागे साँझ' में भाव एवं शिल्प सौंदर्य"।

अंजली पटेल

अतिथि व्याख्याता (हिंदी)

सेजेस सिकोसा,बालोद छत्तीसगढ़।

anjalipatel01389@gmail.com

शोध सार

छत्तीसगढ़ साहित्य के इतिहास के आधुनिक युग (सन 1900 से अब तक) में सर्वाधिक कविताओं की रचना हुई। इसी आधुनिक युग के महत्वपूर्ण कवि एवं संत पवन दीवान जाने-पहचाने नाम हैं। उनका जन्म त्रिवेणी संगम (महानदी, पैरी और सोंढुर नदी) राजिम के पास स्थित किरवई गाँव में 01 जनवरी 1945 को एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में हुआ।

छत्तीसगढ़ प्रदेश की मिट्टी की सुगंध उनकी कविताओं में रची-बसी है। यहाँ की माटी, संस्कृति, परंपरा, जीवनचर्या, तीज-त्योहार उनके काव्य में भाव बनकर स्वरित हुए हैं तथा कला और शिल्प का कुशल समन्वय उनके काव्य में दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध आलेख संत पवन दीवान के काव्य में भाव एवं शिल्प सौंदर्य को स्पष्ट करता है।

शब्द कुंजी : झेंझरी, सोहारी, ठेठरी, मुखारी, सिजहा।

छत्तीसगढ़ी भाषा में कथा-वाचन की शैली से घर-घर में पहचान बनाने वाले संत तथा छत्तीसगढ़ी के सुंदर एवं सटीक शब्दों के प्रयोग से अपने काव्य को अत्यधिक आकर्षक बनाने की क्षमता में निपुण कवि पवन दीवान श्रोतागण एवं पाठक वर्ग में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

उनकी रचनाएँ गुदगुदाती हैं, हँसाती हैं तथा यथार्थ का साक्षात्कार कराती हैं। वे छत्तीसगढ़ के जनजीवन की मनोरम झाँकी प्रस्तुत करती हैं।

उन्होंने अपनी कविता 'राख' में जीवन को समझाकर उत्कृष्ट काव्य-सृजन की योग्यता का परिचय दिया है। तथा 'झेंझरी के ठेठरी', 'खेत-खार बखरी मं', 'सुरुज टघरत हे' आदि कविताओं में भावों को सुंदरता के साथ सुरक्षित रखते हुए उत्कृष्ट शिल्प-विधान प्रस्तुत किया है।

उनकी 'राख' कविता जीवन की वास्तविकता को इंगित करती है। जीवन नश्वर है तथा सभी जीवों का अंत निश्चित है। मिट्टी से निर्मित यह शरीर अंत में राख ही होना है अर्थात मृत्यु सत्य है। सभी ज्ञानी, महात्मा, राजा-महाराजा को इस संसार से जाना ही पड़ा।

"तहूँ होबे राख, मोहूँ होहूँ राख
सब होही राख
सुरू से आखिरी तक
सब हे राख
एकरे सखी शंकर भगवान
चुपर ले हे राख।"

'राख' काव्य के अंत में मृत्यु को जीवन की वास्तविकता के रूप में स्वीकार करने हेतु भगवान शिव द्वारा भस्म (राख) को अपने शरीर पर धारण करने का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

इस काव्य में भाषा सहज, प्रवाहयुक्त, लयात्मक एवं प्रतीकात्मक है। यमक अलंकार का भी सुंदर प्रयोग हुआ है —

"राखत भर ले राख, तहां ले आखिरी मं राख" —

यहाँ प्रथम 'राख' का अर्थ रखना है, जबकि दूसरे 'राख' का अर्थ भस्म (राख) है।

यह छोटा-सा काव्य 'राख' कवि पवन दीवान की संत वाणी की देन है तथा अर्थगत सौंदर्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।इसी कारण ही लोक की जुबान में आज भी है।

एक ओर जहाँ 'राख' काव्य गहरे अर्थों में गोता लगाते हुए भावों की गहराई तक पहुँचता है, वहीं दूसरी ओर कवि का काव्य 'झेंझरी के ठेठरी' लोक-संस्कृति और तीज-त्योहार के अवलोकन मात्र से ही ठहाकों की गूँज उत्पन्न कर देता है।

छत्तीसगढ़ का पारंपरिक त्योहार तीज वर्ष में एक बार आता है। इस काव्य में तीज पर करेला खाने की रीति तथा मायके से प्राप्त साड़ी को विषय बनाकर हास्य उत्पन्न किया गया है—

"चुरुस ले बाजे करेला के बीजा,
पहिरे बर मिलथे वो रंग-रंग के लुगरा,
लुगरा बर कर डारें कूद-कूद के झगरा।"

हास्य केवल यहीं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि कल्पना-लोक में भ्रमण कराते हुए गुदगुदाता है—

"लेत बरत चुल्हा मं चढ़गे तेलई,
झेंझरी के ठेठरी ल खा दिस बिलई,
थूके थूक मं बरा चूरे लार मं सोहारी,
लपटप चबावत रोगही मुखारी।"

काव्य की प्रत्येक पंक्ति कवि की कथ्य-शैली के कारण ठहाकों से गूँज उठती है—

"गाँव भर देख लेबो सबो के तीजहा,
सही-सही के सब दुःख ल तन होगे सिजहा,
रोज-रोज नई पावन मइके के कोरा,
फेर जल्दी आबे रे तीजा अऊ पोरा।"

नारियों के भाव-क्रिया को समझने की कला में कुशल कवि ने तीज-त्योहार में महिलाओं के एक-दूसरे के घर जाकर अपनत्व का अनुभव करना तथा पुरानी स्मृतियों में डूबकर पुनः उसी पुरातन भाव में खो जाने का यथार्थ चित्रण किया है।

हास्य उनके काव्य-जीवन का अभिन्न अंग था, इसलिए 'झेंझरी के ठेठरी' में केवल कथ्य-शैली और सांस्कृतिक शब्दावली के संयोजन से ही हास्य रस की उत्पत्ति हुई है। साथ ही स्त्रियों के मायके से वियोग तथा पुनः आने की आकांक्षा को तीज पर्व से जोड़कर करुण रस का भी सूक्ष्म संचार किया गया है।

इस प्रकार **'झेंझरी के ठेठरी'** में कवि ने केवल हास्य के रंग ही नहीं भरे, बल्कि महिलाओं की भावनाओं का तीज-पर्व से गहरा संबंध स्थापित कर काव्य को हृदयस्पर्शी बना दिया है। यह कवि की सूक्ष्म दृष्टि और उत्कृष्ट काव्य-कला का परिणाम है।

इसी प्रकार 'खेत-खार बखरी मं गहिरागे साँझ' में छत्तीसगढ़ के ग्रामीण जीवन की संध्या-वेला का सजीव चित्रण मिलता है। इस कविता में गाँव की शाम के दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं—

छत्तीसगढ़ अंचल के बच्चे धूप से तपकर शाम को घर लौट आते हैं। इमली के पेड़ पर बसेरा करने वाले पक्षी एकत्र हो जाते हैं। कोंसी (धान का पौधा) भी मानो विश्राम करने लगता है। राउत जाति का युवक चौपाल में बाँसुरी बजाता है।
यह कविता छत्तीसगढ़ की ग्राम्य संस्कृति का जीवंत प्रमाण है। दिनभर मेहनत करने वाले किसान वर्ग का शाम को भूखे-प्यासे घर लौटना, भोजन करना और हाथ-पैरों को विश्राम देना—यह सब श्रमशील समाज का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है—

"खेत-खार बखरी मं गहिरागे साँझ,
लइका मन धूरा मं सने-सने घर आ गे।
चिरई-चुरगुन अमली के डारा मं सकलागे,
तरिया के पार जइसे झमके रे झाँझ,
खेत-खार बखरी मं गहिरागे साँझ।"

इस प्रकार संत एवं कवि पवन दीवान के काव्य में जहाँ एक ओर लोकजीवन की सजीवता है, वहीं दूसरी ओर भाव, शिल्प, भाषा, अलंकार और लोक-संस्कृति का अद्भुत समन्वय दृष्टिगत होता है। यही उनके काव्य का वास्तविक सौंदर्य है।

कवि पवन दीवान ने छत्तीसगढ़ के जनजीवन को मात्र लिखा ही नहीं, बल्कि उसे जिया भी है। उनके व्यक्तित्व की छाप, ठहाकों की गूँज के साथ, उनके काव्य में भी दृश्य और श्रव्य रूप में अनुभव की जा सकती है।

विद्वान तथा आध्यात्मिक आचार्य होने के कारण उनके काव्य में साधारण शब्द भी गहरे आध्यात्मिक अर्थ धारण कर लेते हैं। ऊर्जावान संत-कवि पवन दीवान का काव्य ओज गुण और माधुर्य गुण से युक्त होकर जनमानस में आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करता है।

छत्तीसगढ़ की संस्कृति में रचे-बसे होने के कारण कवि पवन दीवान ने यहाँ की सांस्कृतिक सरलता और सहजता को सूक्ष्म दृष्टि से, यथार्थ के साथ, अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य में लोकजीवन की आत्मा, अध्यात्म की गहराई और हास्य की मधुरता एक साथ मिलकर अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है।

संदर्भ सूची :

सत्यभामा आडिल — छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य
नरेंद्र देव वर्मा — छत्तीसगढ़ भाषा का उद््विकास रायपुर।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.